Abstracts and papers

The abstract, not exceeding 300 words typed in MS word **(Font-Times New Roman, Size - 12)**, mentioning title, name(s) of author(s) and address should reach via e-mail seminaranthro2012@gmail .com by **15th Feb, 2012**. Full papers, not exceeding 3000 words should reach on or before **28th Feb, 2012**. Current Anthropology pattern may be followed in preparing the abstract and the full-length paper (including the references).

सारांश एवं शोध पत्र

प्रतिभागियो से अनुरोध है कि वे अपने शोध पत्र के सारांश को 300 शब्दों में शीर्षक एवं लेखकों के नाम व पते के साथ एम एस वर्ड में टाईप करके **(कृती देव 10, साईज-16)** ई-मेल seminaranthro2012@gmail .com, पर **15 फरवरी, 2012** तक भेजें। आप अपने पूर्ण शोध पत्र 3000 शब्दों में **28 फरवरी, 2012** तक भेजें। सारांश एवं शोध पत्र लिखने की शैली के लिए कृपया Current Anthropology पत्रिका का संदर्भ ले।

Registration

Registration is compulsory for all the delegates. There will be on-the-spot registration for the outstation delegates. For all the local delegates, last date for registration is **10th March, 2012. Registration fee is ₹500/- for all participants.**

पंजीकरण

सभी प्रतिभागियों के लिए पंजीकरण अनिवार्य है। बाहर से आने वाले प्रतिभागियों के लिए मौके पर ही पंजीकरण किया जाएगा जबकी स्थानीय प्रतिभागियों को 10 मार्च, 2012 तक पंजीकरण कराना अनिवार्य है। सभी प्रतिभागियों के लिए पंजीकरण की धनराशि ₹500/- रूपये तय की गई है।

आयोजन समिति
Organizing Committee

संरक्षक
श्री विभूति नारायण राय
कुलपति

सह-संरक्षक
प्रो. ए. अरविंदाक्षन
प्रतिकुलपति

सलाहकार समिति
प्रो. मनोज कुमार, अधिष्ठाता
प्रो. इलीना सेन
प्रो. बी. एम. मुखर्जी

संगोष्ठी संयोजक
डॉ. फरहद मलिक
विभागाध्यक्ष

आयोजन सचिव
डॉ. निशीथ राय

आयोजन समितिः सदस्य
डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय
डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी
डॉ. बीर पाल सिंह यादव
श्री वीरेन्द्र प्रताप यादव
डॉ राजीव रंजन राय
डॉ. रूपेश कुमार सिंह
डॉ. प्रशांत खत्री
सुश्री अर्चना भालकर

INVITATION
आमंत्रण

राष्ट्रीय संगोष्ठी

NATIONAL SEMINAR ON

Tribal People of Central India: Problems and Prospects
मध्य भारत के आदिवासी : समस्याएँ एवं संभावनायें

March 19-20, 2012
मार्च 19-20, 2012

आयोजक
मानवविज्ञान विभाग

Organized by
Department of Anthropology

ज्ञान शांति मैत्री

Venue
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishvavidyalaya, Gandhi Hill, Umari, Wardha-442 005, Maharashtra
स्थान
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
गांधी हिल्स, उमरी,
वर्धा - 442 005 (महाराष्ट्र)

Website: www.hindivishwa.org
ई-मेल/Email: gandhi.anthro@gmail.com,
फोन नं./Phone No. 07152-230197

About the University and Department

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya is a central university established in 1997 with a view to enrich hindi language and literature by teaching and research. There are four schools in the University viz- School of Culture, School of Language, School of Literature, School of Translation and Interpretation. The department of Anthropology comes under the School of Culture and was established in September 17, 2009.

विश्वविद्यालय और विभाग का परिचय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है। जिसकी स्थापना सन 1997 में हिंदी भाषा एवं साहित्य में शिक्षा एवं शोध को बढावा देने के लिए की गई थी। इस विश्वविद्यालय में चार विद्यापीठ है- संस्कृति, भाषा, साहित्य और अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ। मानवविज्ञान विभाग की स्थापना 17 सितम्बर, 2009 को संस्कृति विद्यापीठ के अंतर्गत हुई।

Introductory note on the seminar theme

Tribes in India constitute the weaker section of India's population from the ecological, economic and educational angles. From the historical point of view, they have been subjected to the worst type of exploitation. Illiteracy, poverty, ill health, malnutrition, starvation continue to be higher among the scheduled tribes than any other section of the population. Government of India has made concerted efforts to enhance the standard of living and overall condition of these tribes. Development planning in India has attempted to foster their social and economic empowerment by focusing on food security, health, education, employment and income generation.

Despite the constitutional and various legal protection against alienation of tribal land, the problem has multiplied. The Ministry of Rural Development in its 2007-08 annual report states, "The state government has accepted the policy of prohibiting the transfer of land from tribals to non tribals and for restoration of alienated tribal lands to them". The report further states, "Reports received from various states indicate that 5.06 lakh cases of tribal land alienation have been registercd, covering 9.02 lakh acres of land." More than 15 percent of total tribal population have been displaced without any comprehensive programme of rehabilitation. Therefore they have been protesting against various so called development projects like dam, mining and industrial plants. The provision of law under PESA and the Recognition of Forest Right Act came into force, but the act remained largely unimplemented across the country. Because of the above facts tribal unrest and aggression have been spreading rapidly in many areas of the country. All these call for a fresh look and a national debate at the entire issue of tribal situation from the viewpoints of anthropologists and other specialists working on tribal development. Thus, in this backdrop a national seminar on Tribal People of Central India: Problems and Prospects is being organized. The aims of the proposed seminar are :

i) To focus on the aspects of socio-economic and cultural change taking place among tribal communities in central India
ii) To assess the nature and role of educational and health care institutions in tribal areas.
iii) To make a review of the entire scheme of development and analyze the approaches and models of development used by development agencies and anthropologist.
iv) To assess the right of tribal people over natural resources and understand the dynamics of tribal unrest.

प्रस्तावना

जनजातीय समूहों के संदर्भ में एक बात तो स्पष्ट है कि भारत के परिपेक्ष्य में उनमें विभिन्नता पाई जाती है, जिसका आधार, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं भौगोलिक है। आज भी अधिकतर समूह ऐसे हैं जो भारत की तथाकथित मुख्य धारा का हिस्सा नहीं बन पाए हैं और गरीबी एवं अभाव में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। स्वतंत्रता के उपरांत भारत सरकार ने इनकी जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए कई कदम उठाए, जिसमें उनकी खाद्य समस्या, स्वास्थ, शिक्षा एवं रोज़गार से जुड़े मुद्दे मुख्य रूप से सामने आए। भारत के संविधान में भी कई ऐसे प्रावधान है जिससे जनजातीय समाज के हितों की रक्षा और विकास किया जा सके। परन्तु इन प्रयासों के बावजूद आज भी बहुत कुछ करना बाकी है। कई मुद्दे ऐसे हैं जिन पर लोगों का ध्यान आकर्षित करना अनिवार्य है, जैसे ज़मीन, वनों के उपयोग और उनके संरक्षण, जनजाती समूहों के विस्थापन से जुड़े मुद्दे इत्यादि। इसी पृष्ठीूमि में इन मुद्दों की महत्ता को देखते हुए इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है जिसके मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है-

i. जनजातीय समाज में सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक बदलाव से जुड़े मुद्दों पर विमर्श
ii. जनजातीय क्षेत्र में शिक्षा एवं स्वास्थ व्यवस्था की भूमिका और प्रभाव का आकलन करना
iii. विकास की योजनाओं का समीक्षा और मानवशास्त्रीय एवं अन्य विकास संबंधित संस्थाओं द्वारा सुझाए गए उपागमों एवं प्रारूपों का विश्लेषण करना
iv. प्राकृतिक संसाधनों पर जनजातीय समूहों के अधिकार और उनमें व्याप्त असंतोष को समझना

How to reach the venue ?

Wardha bus stand and railway station is about 6 Kms. from the university campus. The Sevagram railway station is around 8 Kms & Nagpur railway station is 80 Kms from the campus. Railway service is frequently available from Nagpur Railway station to Sevagram and Wardha.

संगोष्ठी स्थल पर कैसे पहुँचे ?

वर्धा बस स्टैंड एवं रेलवे स्टेशन विश्वविद्यालय से 6 किलोमीटर की दूरी पर है। सेवाग्राम रेलवे टेशन विश्वविद्यालय से 08 किलोमीटर दूर और नागपुर रेलवे स्टेशन 80 किलोमीटर दूरी पर है। नागपुर रेलवे स्टेशन से थोडी-थोडी अवधि के बाद वर्धा अथवा सेवाग्राम के लिये गाडियाँ मिलती है।